بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 20 फ़रवरी 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(तबलीग़ महीने की तिथि 20,1405 हश)

# आँहज़रत ﷺ के ग़ुलाम-ए-सादिक़ की इबादत-ए–इलाही का ईमान को बढ़ाने वाला तज़्किरा (वर्णन)।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-20.02.2026

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب.143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरह अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अल्लाह तआला के फ़ज़ल से कल से रमज़ान शुरू हो रहा है। यह रोज़ों का महीना अल्लाह तआला ने हमें ख़ास तौर पर अपने साथ सम्बन्ध बनाने और अपनी रूहानी इस्लाह (आध्यात्मिक शुद्धि) के लिए मुहय्या (उपलब्ध) फ़रमाया है। अल्लाह तआला हर अहमदी को इस महीने में ज्यादा से ज्यादा फ़ायदा उठा की तौफ़ीक़ दे। लेकिन हमेशा याद रखें कि हक़ीक़ी फ़ायदा (वास्तविक लाभ) तभी होता है जब रमज़ान के बाद भी हम अल्लाह की मुहब्बत और इबादत के मअयार (आदर्शों) को बनाए रखते हैं, बल्कि उन्हें और ऊँचा करने की कोशिश करते हैं। तब हम अपने पैदायश के मक़सद को पूरा करने वाले होंगे।

पिछले कुछ जुमों से मैं हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अल्लाह से मुहब्बत, इबादत के तरीक़े और मायार (स्तर), और मोमिनों को इस पर अमल करने के बारे में जो दी गई हिदायतें और नसीहतें हैं उन का वर्णन करता रहा हूँ। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलै. के आँहज़रत ﷺ के उस्वे की पैरवी में वाक़आत (घटनाएं) बयान किये थे, तो यह मज़मून (विषय) अभी चल रहा है और आज रमज़ान की मुनासबत से भी यही चलता रहेगा।

हुज़ूरे अनवर ने फरमाया कि सिर्फ़ यही न हो कि इन बातों को सुनकर महज़ूज़ (आनंदित) होना ही उद्देश्य हो, बल्कि ये हमारे लिए रहनुमा (मार्गदर्शक) होने चाहिएं।

हुज़ूरे अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. के वाक़आत में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. की मौलवी मुहम्मद अब्दुल्लाह बटालवी साहब रज़ी. के एक बयान से सम्बंधित रिवायत पेश करते हुए फ़रमाया कि ..... हज़रत मसीह मौऊद अलै. के तअल्लुक़ बिल्लाह, तक़वा, तहारत और इबादत में शगफ़ (लीनता) पर रोशनी पड़ती है, इस लिए मैं उसका ज़िक्र करना ज़रूरी समझता हूँ।

अमतुर्रहमान साहिबा का बयान है कि एक दिन हजरत मसीह मौऊद अलै. और हजरत उम्मुल मोमिनीन ने यह तजरबा करना चाहा कि क्या आँखें बंद करके काग़ज़ पर लिखा जा सकता है या नहीं। अतः कागज़ का वह टुकड़ा पकड़ कर उस पर हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने यह लाइन (वाक्य) लिखी, जो मुझे हर्फ़ बा हर्फ़ (शब्दशः) याद है। हुज़ूर अलै. ने आँखें बंद करने की हालत में जो लिखा वह यह था कि इंसान को चाहिए कि हर समय ख़ुदा तआला से डरता रहे और पंज वक़्त उसके हुज़ूर दुआ करता रहे।

हुजूर ने फरमाया कि अतः यह वह मअयार (मानक) है जिसकी आप अलै. ने हमेशा अपने मानने वालों को तलकीन (आग्रह) की है। आपकी हमेशा यही ख्वाहिश थी कि मेरे मानने वाले बल्कि हर मोमिन, हर इंसान ऐसा हो जिसमें ख़ुदा खौफी (अल्लाह की नारज़गी का डर) और वह इबादत की तरफ़ तवज्जो रखने वाला हो।

इसी प्रकार हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने एक और घटना बयान की है कि मियाँ अब्दुल्लाह साहब सनौरी ने बताया है कि हज़रत साहब अलै. ने 1884 में इरादा फ़रमाया था कि कादियान से बहार जाकर चिल्ला कशी करें और हिन्दुस्तान की सैर भी करें। पहले सुजानपुर ज़िला गुरदासपुर में जाकर ख़िलवत (एकांतवास) में रहने का इरादा किया लेकिन बाद में इल्हाम हुआ कि तुम्हारी उक़दा कुशाई (दीन के भेद खुलना) होशियार पुर में होगी। अतः जनवरी 1886 में होशियार पुर जाने से पहले मुझे कादियाँ बुला लिया गया और शेख मेहर अली रईस होशियार पुर को ख़त लिखा कि मैं दो माह के लिए होशियार पुर आना चाहता हूँ , शहर के किनारे पर बाला खाने (दो मंजिला) वाले मकान का इंतज़ाम किया जाए। उन्होंने अपना एक मकान, जो "तबेला" के नाम से जाना जाता था, खाली कर दिया।

हुज़ूर बहली में बैठ कर दरिया ब्यास के रास्ते तशरीफ़ ले गए। साथ में मियां अब्दुल्लाह, शेख हामिद अली और फतह खान थे। दरिया पार करने के लिए नाव ली गई। जब नाव चल रही थी तो हुजूर ने फरमाया कि "मियां अब्दुल्लाह! कामिल की सोहबत (संगत) इस दरिया के सफर की तरह है, जिसमें पार होने की भी उम्मीद (संभावना) है और डूबने का भी अंदेशा (आशंका) है। कहते हैं कि हुजूर की ये बात मैंने सरसरी तौर पर सुनी, लेकिन बाद में जब फ़तह खान मुरतद हो गया तो यह बात याद आई।

हुज़ूर अलै. ने हाथ से लिखे हुआ एक इश्तिहार जारी किया कि चालीस दिन तक कोई मुझसे व्यक्तिगत मुलाकात नहीं करेगा और न ही मुझे दावत के लिए बुलाएं। इन चालीस दिनों के बाद मैं बीस दिन और ठहरूंगा, उन बीस दिनों में मुलाक़ात और सवाल-जवाब की इजाज़त होगी। हमें भी हुक्म दिया कि ड्योढ़ी के अंदर ज़नजीर हर समय लगी रहे और घर में से भी कोई आदमी मुझे न बुलाए, न कोई ऊपर आए। नमाज़ भी ऊपर ही अदा करूंगा। नमाज़-ए-जुमा के बारे में आप अलै. ने फरमाया कि कोई सुनसान-सी मस्जिद तलाश करो, जो शहर के एक किनारे पर हो, जहां हम अलग होकर नमाज़ अदा कर सकें।

एक बार हज़रत साहब अलै. ने मुझसे फ़रमाया, "मियां अब्दुल्लाह! इन दिनों मुझ पर अल्लाह तआला के बड़े-बड़े फ़ज़्ल के दरवाज़े खुले हैं और कभी-कभी देर तक अल्लाह तआला मुझसे बातें करता रहा है। यदि इन बातों को लिखा जाए तो वे कई पन्नों में फैल जाएँ।" चुनाँचे मियां अब्दुल्लाह साहिब कहते हैं कि मौऊद बेटे के बारे में इल्हाम भी इसी चिल्ले में हुए थे, और चिल्ला समाप्त होने के बाद होशियार पुर से ही आपअलै. ने इस पेशगोई (भविष्यवाणी) का एलान फ़रमाया था।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह 20 फ़रवरी 1886 का इश्तहार (विज्ञापन पत्र) है जो जमाअत में पेशगोई मुस्लेह मौऊद रज़ी. के नाम से भी जाना जाता है। यह भी एक ख़ास तवारुद (संयोग) है कि आज 20 फ़रवरी है और मौऊद बेटे की पेशगोई के बड़े शान से पूरे होने का दिन भी है। वह मौऊद बेटा जो पेशगोई के मुताबिक पैदा हुआ, बावन साला ख़िलाफ़त उसकी कायम रही और अल्लाह तआला ने उसे सफलताएं प्रदान कीं। वे सारी पेशगोईयाँ, इल्हाम और बातें जो पेशगोई मुस्लेह मौऊद में थीं वे सब हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ी. में पूरी हुईं। और यह तवारुद (संयोग) मैं इस लिए कह रहा हूँ कि यह घटना आज ही के दिन मेरे सामने आ गई, वरना आगे पीछे भी आ सकती थी लेकिन अल्लाह तआला की इसमें यह हिकमत थी कि आज के दिन ही आए और मैं बयान भी कर दूं। इसके आजकल जलसे भी जमाअत में हो रहे हैं और उससे तारीख़ का भी पता लग जाता है, एम.टी.ए. पर भी प्रोग्राम आ रहे हैं, उनसे भी तारीख़ का पता लग जाता है, उन्हें देखना चाहिए।

हुजूर ने ध्यान दिया कि इंसान को हमेशा अपने अंजाम बखैर (सुखी अंत) और ईमान की रोशनी के लिए दुआ करनी चाहिए, खास तौर पर रमज़ान में यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमारा अंजाम अच्छा करे और हमें ईमान की रोशनी बनाए रखना चाहिए।

हुज़ूर फ़रमाते हैं कि उन दिनों फ़तह ख़ान बहुत ही मोअतकिद था और कहता था कि मैं हज़रत साहिब को नबी समझता हूँ। लेकिन जब उसे ठोकर लगी तो वह मुरतद (धर्मत्यागी) हो गया।

इस तनाज़ुर (सन्दर्भ) में हुज़ूर-ए-अनवर ने ध्यान दिलाया कि इंसान को हमेशा अपने अच्छे अंजाम (अंत) के लिए दुआ करनी चाहिए और अपने ईमान की मज़बूती की कोशिश करते रहना चाहिए और इसके लिए दुआ भी मांगनी चाहिए, और विशेष रूप से रमज़ान में जो दुआ की जाती है, उनमें यह दुआ भी हर एक को करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमारा अंजाम अच्छा करे और हमें ईमान में सलामत रखे।

हजूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि इसी तरह की एक और घटना आप अलै. की नमाज़ पढ़ने के बारे में है। कुछ लोग नमाज़ के फ़िक़्ही मसलों के बारे में सवाल करते हैं कि हाथ किस तरह बांधने चाहिए और नमाज़ की मुख़तलीफ़ हरकात (विभिन्न गतिविधियाँ) किस प्रकार की होनी चाहिए?

मियां अली मुहम्मद साहब हज़रत मसीह मौऊद अलै. की नमाज़ का तारीक़ बयान करते हैं कि एक बार मैंने हुज़ूर को सुन्नत नमाज़ पढ़ते हुए देखा, हुज़ूर अलै. ने हाथ नाफ से ऊपर बांधे हुए थे और दाईं तरफ़ की बीच वाली उंगली कोहनी तक पहुँचती थी, बल्कि कुछ पीछे ही रहती थी। सजदा करते समय आप अलै. दोनों हाथों के बीच माथा और नाक जमीन पर रखते थे और उंगलियां सीधे काबे की दिशा में

होती थीं। और जब आप अलै. सजदे से उठते थे तो क्यूंकि आप अलै. की दस्तारे मुबारक (पगड़ी) ढीली होती थी, पीछे हट हठ जाती थी, तो उसे उँगली से ठीक कर लिया करते थे।

हज़रत मास्टर नज़ीर हुसैन साहिब ने आप अलै. को एक रात करीब तीन बजे हुज़ूर को तहज्जुद में देखा, हुज़ूर नमाज़ पढ़ रहे थे मैं भी वज़ू करके हुज़ूर के पीछे कुछ दूरी पर पढने लग गया, और मैंने बहुत कोशिश की कि हुज़ूर जितना क़याम (नमाज़ में खड़े होना) या रुकूअ या सजदा करने की कोशिश करूं, मगर न कर सका, केवल दो रकअत के बाद ही थक गया, और जबकि हुज़ूर अभी तक उसी रकअत में थे, जिसमें मैं शामिल हुआ था। कहते हैं कि दिन में जब हुज़ूर के पास हम बैठे हुए थे और हुज़ूर जमाअत के लोगों को तहज्जुद पढने को कह रहे थे तो इस ख़ाकसार ने पूछा कि यदि तहज्जुद न पढ़ें तो फिर कम से कम क्या करें? तो हुजूर ने फरमाया: "कसरत (अधिक से अधिक) से इस्तिग़फ़ार करो, तस्बीह और तहमीद कसरत से करो, इससे फिर तहज्जुद पढ़ने की तौफ़ीक़ मिल जाती है।

हुज़ूरे अनवर ने स्पष्ट किया कि ये जो दुआएं आप अलै. ने सिखाईं, इस लिए नहीं कि तहज्जुद का मुतबादिल (विकल्प) हो जाएँगी, बल्कि इस लिए कि इनसे तहज्जुद पढ़ने की तौफ़ीक़ मिलेगी। पस यह वह नुसख़ा है कि जिसे हमें भी सुस्ती के दिनों में अपनाना चाहिए।

आजकल हम रमज़ान के महीने से गुज़र रहे हैं और तहज्जुद पढ़ने की कुछ न कुछ तौफ़ीक़ तो मिल ही जाती है। अगर नहीं भी मिलती तो कोशिश करनी चाहिए। बेशक मस्जिद में तरावीह भी पढ़ी जाती है और यह कमजोरों या ऐसे लोगों के लिए है, जो सही समय पर नहीं उठ सकते या अधिक समय नहीं दे सकते, एक मुताबादिल (विकल्प) के तौर पर होती है। लेकिन यह ऐसा विकल्प नहीं जो पूरा हक़ अदा कर सके। आंहज़रत स. की सुन्नत और आप स. के ग़ुलाम ए सादिक़ का तारीक़ तो यही था कि रात को उठ कर तहज्जुद पढ़ी जाए, इस लिए चाहे तरावीह पढ़ भी ली हो, कोशिश करनी चाहिए कि दो नफ़ल या चार नफ़ल ही सही, लेकिन तहज्जुद की नमाज़ ज़रूर पढ़ें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने आख़िर में फ़रमाया कि हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं—दुनियादारी को बिल्कुल नहीं भी छोड़ना। जो अल्लाह तआला ने इनाम दिए हैं, उनकी क़द्र भी करना है। हर व्यक्ति को अपने हालात देखकर देखना (संतुलन) चाहिए— न तो दुनिया में इतने डूबें कि बिलकुल डूब जाएं और न इतने तारिक-उद-दुनिया (संसार त्याग) हों कि जो दुनिया के हक़ हैं वे भी ख़त्म हो जाएं। एक समूई (संयुक्त) हुई इस्लाम की तालीम है, उसको इखत्यार करना चाहिए।

खुतबा सानिया से पहले हुजूर-ए-अनवर ने माह-ए-रमज़ानुल-मुबारक के अवसर पर इबादत का हक़ अदा करने, मज़लूम अहमदियों और असीरान-ए-राह-ए-मोला के लिए, तथा उम्मत-ए-मुसलिमा के लिए और दुनिया को तबाह होने से बचाने के लिए विशेष दुआओं की तहरीक फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

**हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652**
**टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब- 18001032131**